गीता महिमा

मूकं करोति वाचालं, पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्दमाधवम् ॥१॥
वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥२॥

गीता हृदय भगवान का सब ज्ञान का शुभ सार है ।
इस शुद्ध गीता ज्ञान से ही चल रहा संसार है ॥१॥
गीता परमविद्या सनातन कर्म शास्त्र प्रधान है ।
परबह्म रूपी मोक्षकारी नित्य गीता-ज्ञान है ॥२॥
यह मोह माया कष्टमय तरना जिसे संसार हो ।
वह बैठ गीता नाव में सुख से सहज में पार हो ॥३॥
संसार के सब ज्ञान का यह ज्ञानमय भंडार है ।
श्रुति, उपनिषद, वेदान्त-ग्रन्थों का परम शुभ सार है ॥४॥
गाते जहां जन नित्य 'हरिगीता' निरंतर नेम से ।
रहते वही सुख-कन्द नटवर नन्द-नन्दन प्रेम से ॥५॥
गाते जहां जन गीत-गीता प्रेम से धर ध्यान हैं ।
तीरथ वहीं भव के सभी शुभ शुद्ध और महान हैं ॥६॥
धरते हुए जो ध्यान गीता-ज्ञान का तन छोड़ते ।
लेने उसे माधव मुरारी आप ही उठ दौड़ते ॥७॥
सुनते-सुनाते नित्य जो लाते इसे व्यवहार में ।
पाते परम-पद ठोकरे खाते नहीं संसार में ॥८॥

==========

गीता आरती

ॐ जय भगवद्गीते, देवी जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते ॥ ॐ जय॥
कर्म-सुकर्म-प्रकाशिनि, कामासक्ति हरा ।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा ॥ ॐ जय ॥
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी ॥ ॐ जय॥
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा ॥ ॐ जय॥
आसुर-भाव-विनाशिणि, नाशिनि तम-रजनी ।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी ॥ ॐ जय॥
समता, त्याग, सिखावनि, हरि-मुख की वानी ।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी ॥ ॐ जय॥
दया-सुधा वरसावनि, मातु कृपा कीजै ।
हरि-पद-प्रेम प्रदायिनि, अपनो कर लीजै ॥ ॐ जय॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाशिष्यते
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः